लीची बर्बाद करने वाले कीड़ों की हुई पहचान

मुजफ्फरपुर | कार्यालय संवाददाता

अगले सीजन में लीची पर कीड़े कहर नहीं बरपा सकेंगे। लीची वैज्ञानिकों ने तत्काल इन कीटों को खत्म करने का तरीका इजाद किया है। इसका परीक्षण सफल रहा है। बस इसका अंतिम परीक्षण बाकी है। इसके बाद अभियान चलाकर कीड़ों को खत्म किया जाएगा।

इसी सिलसिले में शुक्रवार को देशभर के वैज्ञानिक केंद्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुशहरी में जुटे थे। केंद्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के डायरेक्टर प्रो. डॉ. विशालनाथ ने बताया कि लीची फ्रूट बोरर नेटवर्क प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। इसमें कीड़ों के जीवनचक्र, लीची के नुकसान पहुंचाने के तरीकों व उन्हें रोकने को लेकर काम चल रहा है। इसमें देश भर के आठ सेंटर मिलकर काम करेंगे। प्रोजेक्ट का हेडक्वार्टर भारतीय बागवानी संस्थान, बंगलुरु में होगा। आठ सेंटर में केंद्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुशहरी, पश्चिम बंगाल, पंजाब, झारखंड, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश व केरल को शामिल किया गया है। देश भर से आए वैज्ञानिकों ने कीड़ों को रोकने के लिए केंद्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के तरीके को सराहा। निदेशक ने बताया कि अगले सीजन में लीची को बचाने के लिए सबको साथ मिलकर काम करना होगा। कीड़े की पहचान कार्मोमार्फा साइनोसिस व कार्मोमार्फा क्रैंबरेला के रूप में कर ली गयी है। एक भी लीची के पौधे में यह कीड़ा रह गया तो बाद में दोबारा सारी जगहों पर फैल जाएगा। लीची को बचाने के लिए राज्य सरकार के बड़े पैमाने पर मदद ली जाएगी। बंगलुरु की मदद से लीची अनुसंधान केंद्र फेरोमौन ट्रैप विकसित कर रहा है। इसे 13वीं पंचवर्षीय योजना में शामिल किया जाएगा। इस योजना के लिए केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने पहल की है। इस अवसर पर बंगलुरु के कार्यकारी वैज्ञानिक डॉ. पीबीआर रेड्डी, डॉ. ए कृष्णमूर्ति, डॉ. पीडी कमलाजयंती, उड़ीसा के पार्टनर डॉ. हरिशंकर सिंह, डॉ. यश प्रभाकर समेत दर्जन भर से अधिक वैज्ञानिक मौजूद थे।

उन्मूलन की तैयारी

- केंद्रीय लीची अनुसंधान केंद्र में जुटे देश भर के वैज्ञानिक
- कीड़े खत्म करने को फेरोमौन ट्रैप बनाने पर बनी सहमति
- लीची बचाने का तरीका किया इजाद, अंतिम परीक्षण बाकी